Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

संगीत में परिवर्तन के उत्प्रेरक

डॉ० परमजीत कौर[1]

परिचय

विश्वभर में संगीत के सात स्वर माने जाते है, जिनमें भविष्य में किसी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावना नहीं है। फिर भी संगीत की पृष्ठभूमि में सांगो–पांग परिवर्तन दृष्टिगोचर है। यहीं नहीं इन परिवर्तनों की गति पिछली शताब्दी के उत्तरा(में तेजी से आई और संगीत को भूचाल के बाद वाली परिस्थितियों में छोड़ दिया, जहाँ उसे आज स्थायित्व की तलाश है। संगीत के इस विस्फोट से समस्त वातावरण संगीतमयी प्रतीत होता है, निःसन्देह इसके प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के हैं। इन परिवर्तनों के कारण संगीत का ध्येय मनोरंजन ही नहीं रहा, अपितु कहीं रोगों के निवारण में, कहीं खतरों से अगाह करने में, कही भीड़ को व्यवस्थित करने में और कहीं बु(िबल को विकसित करने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रयोग हो रहा है। कुछ लोग रॉक तथा हैवी मैटल संगीत द्वारा नशा, अश्लीलता तथा ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे हैं। आज संगीत के एक बड़े भाग का उद्योगीकरण हो चुका है। इसे एक उत्पाद की तरह विज्ञापित करके बेचा जाता है। उपभोक्ता भी ऐसे संगीत में गम्भीर नहीं होता और न्मे ंदक जीतवनही की नई कवायत में विश्वास रखता है। इन सबके बावजूद हमारे शास्त्रीय संगीत ने प्रोद्योगिकी तथा भूमण्डलीकरण की आँधियों को झेलते हुए अपनी छवि को बरकरार रखा है।

परिवर्तन के कारण : मानव के विकास के साथ अनेक नई चीजों को अपनाया गया और पुरानी चीजों को त्याग दिया गया। जहां तक कला और संस्कृति की बात है, सृजनकर्ता की उस कृति को सदैव सहराया गया है जो हमें सत्, चित्त और आनन्द की अनुभूति करवाती है। वास्तव में कृति का आंकलन नये या पुराने होने से नहीं बल्कि उसके सार्वभौमिक होने से होता है।

संगीत आदिकाल से परिवर्तित एवं परवृ(ित होकर आज कला के रूप में मुखरित है। संगीत को कला के रूप में प्रतिष्ठा दिलवाने में अनेक कलाकारों की हजारों वर्षों की साधना एवं संघर्ष की कहानी है। परन्तु अब यदि यह पूछा जाए कि भारतीय संगीत, विशेषकर शास्त्रीय संगीत में कोई ठोस परिवर्तन हो रहे हैं – इसका उत्तर नकारात्मक होगा। संगीत का व्याकरण, संगीत की विधाएं, रागों का गायन–वादन तथा ताल विज्ञान आदि की परम्परा का निवारण आज ठीक ऐसे ही हो रहा है जैसा मुगलकाल में होता था। अन्तर केवल इतना आया है कि पं. भातखण्डे तथा पं. प्लुस्कर ने शास्त्रीय संगीत के बिखरे मोतियों को एकरूपता की माला में पिरोकर आज

[1] विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग, एस.डी.कॉलेज, अम्बाला छावनी

Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

जनसाधारण के लिए प्रेरित किया है। पिछले कुछ दशकों में संगीत के क्षेत्र में जो परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, का कारण केवल कलाकारों की कृतियां न होकर उनके चारों ओर हो रहे बदलाव है क्योंकि संगीत निर्वात में उत्पन्न नहीं होता, इसके चारों ओर जो भी परिवर्तन हो रहे हैं, समाज इन्हें स्वीकार करता है, संगीत भी इनसे पृथक नहीं है। दूसरे शब्दों में ''भारतीय शास्त्रीय संगीत उस बहुमंजली इमारत के समान है जिसकी नींव तथा भूतल ठोस कनक्रीट के बने हुए हैं तथा शेष इमारत को आवश्यकतानुसार आकर्षक तथा विहगंम दृष्टि हेतु निरन्तर विकसित किया जा रहा है।''

परिवर्तन की तीव्रता को चित्र नं. 1 द्वारा दर्शाया गया है जो संगीत के विभिन्न प्रारूपों को प्रभावित करता है। परिवर्तन के कारकμ वैज्ञानिक उन्नति तथा तकनीकी विकास, शिक्षा का प्रसार, पुरानी परम्पराओं के विघटन तथा आधुनिक पश्चिम जीवन शैली की ओर झुकाव, इलैक्ट्रोनिक तथा प्रिंट मीडिया में संगीत को एक अहम् स्थान, संगीत का उद्योगीकरण, वैश्वीकरण तथा घुलनशीलता, महान् संगीत विभूतियों के कार्यों का उत्कर्षण तथा सम्मान।

वैज्ञानिक उन्नति तथा तकनीकी विकास : विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी ने गायक तथा ताल वादक के साथ अनेक चीजें जोड़कर जहां गायन को प्रभावशाली बनाया है, वहीं वादक के वादन को आश्चर्यजनक ऊंचाईयों तक पहुंचाने में चमत्कारिक योगदान दिया है। आज एक संगीतकार अपने संगीत को निखारने में प्रोद्योगिकी का भरपूर प्रयोग कर रहा है तो श्रोता भी समय और स्थान की चिंता किए बिना मन चाहे संगीत को प्राप्त करने में सक्षम है। प्रोद्योगिकी ने दूसरा बड़ा लाभ जन साधारण को कठिन परिश्रम से निजात दिलवाकर किया है, फलस्वरूप उसकी दिनचर्या मे ंसमय की बढ़ोतरी होने से संगीत में रूचि बढ़ी है।

राजा–महाराजाओं के दरबार में होने वाले संगीत सम्मेलन अब आधुनिक तकनीकी से बने प्रेक्षागृह में होते हैं और सभी श्रोता एक समान मंच पर निष्पादन कर रहे कलाकारों से सानिध्य प्राप्त करते हैं। तकनीकी विकास से ही आज संगीत एक उद्योग के रूप में कार्यरत है जहां नई–नई अनुसन्धानों से संगीत के बनने तथा संचय करने के तरीके ईजाद हो रहे हैं। इलैक्ट्रोनिक तानुपरा, स्वरमंडल, इलैक्ट्रॉनिक गिटार, सिन्थेसाईजर इत्यादि वाद्यों से संगीत के विद्यार्थी को सीखने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार प्दजमतदमज द्वारा व्दसपदम कार्यक्रम को सुनने तथा सीखने में भी प्रयोग किया जा सकता है।

शिक्षा का प्रसार : मुगलकाल के विघटन के साथ जिन कलाकारों ने भारत की विभिन्न रियासतों में शरण ली थीऋ उनका उद्देश्य अपनी सांगीतिक शिक्षा को अपने वंश या सगे–सम्बन्धियों तक 'घरानों' के रूप में संरक्षण प्रदान करना था। परन्तु 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पं. भातखण्डे तथा पं० प्लुस्कर के प्रयासों से शिक्षा प्रचार केवल संगीत संस्थाओं तक ही सीमित नहीं रहा अपितु विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व–विद्यालयों में भी संगीत विषय पर स्वतंत्र अध्ययन–अध्यापन होने लगा। आजकल संगीत विषय पर न केवल स्वतंत्र अन्वेषण चल रहा है बल्कि अंतःशास्त्रीय अध्ययन तथा अनेक प्रयोग संगीत के रहस्यों को समझने में सहायक हो रहे हैं। जिन क्षेत्रों में अंतः

Purva Mimaansa
A Multi-disciplinary Bi-annual Research Journal
(Referred Peer Reviewed)

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

शास्त्रीय अध्ययन संभव हो रहा है – भौतिक विज्ञान, गणित, शरीर क्रिया विज्ञान, मनोविज्ञान तथा संगीत चिकित्सा विज्ञान से संब(करके अनेक रोगों से निजात दिलवाने में सहायक सि(हो रही है। हमारे देश में अभी संगीत चिकित्सा का प्रचलन तथा अन्वेषण निमेष मात्र ही है परन्तु अमेरिका जैसे देश में हजारों रजिस्टर्ड संगीत चिकित्सक इस क्षेत्र में कार्यशील है।

भारत में गुरु शिष्य परम्परा गुरुकुलों, घरानों से होती हुई ;गुरु–शिष्य में दूरी बढ़ती हुईद्ध कक्षाओं में सिमटने लगी। तकनीकी विकास से रेडियो, टी.वी. इंटरनेट इत्यादि सम्प्रेषण माध्यमों से दूरस्थ संगीत शिक्षा की सम्भाावनाएं बढ़ रही हैं दृश्य–श्रव्य साधनों द्वारा एक प्रबु(कलाकार अपने शिष्यों को देश–विदेश में निशुल्क या निश्चित शुल्क लेकर शिक्षा प्रदान कर सकता है। भारत में प्राचीन गुरू–शिष्य परम्परा को जीवित रखने के लिए इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरगढ़, संगीत रिसर्च अकादमी कलकत्ता, ध्रुपद केन्द्र भोपाल, मध्यप्रदेश तथा शास्त्रीय संगीत को समर्पित धारावाड़ आदि ऐसी संस्थाएं प्रयत्नशील है।

जीवनशैली में बदलावः जीवन शैली किसी व्यक्ति, समूह या संस्कृति की रूचि, राय, व्यवहार तथा व्यवहार के झुकाव की दिशा को सम्मिलित रूप से व्यक्त करती है।''1 वैज्ञानिक उन्नति ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, यह चाहे उस का कार्यक्षेत्र हो या उसके फुरसत के क्षण। अब उसे अपनी रूचियों को पूरा करने के अनेक साधन उपलब्ध हैं। संगीत में रूचि रखने वालों के लिए बाजार में विभिन्न प्रकार का संचित संगीत विद्यमान है। ग्रामोफोन से संगीत संचय प्रारम्भ होकर, कैसेट प्लेयर के रूप में विकसित हुआ। कम्प्यूटर के विकास के साथ इंटरनेट की खोज ने संगीत के प्रचार–प्रसार तथा इसके व्यापार में जबरदस्त इजाफा किया हैं आज 'आयट्यूनस' के माध्यम से ैजमअमरवइे ने रेडियो, मोबाइल तथा कम्प्यूटर पर हर प्रकार के संगीत को सुनने का अवसर प्रदान करवाया है। शारीरिक परिश्रम करने वाला अपने काम के साथ अपनी इच्छानुसार संगीत सुन सकता है। आज कार्यालयों, अस्पतालों, औद्यागिक इकाईयों, हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों तथा बस अड्डों पर संगीत सुनने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। पिछले दशक से विशेषकर युवाओं में संगीत सिर चढ़ कर बोल रहा है।

लोगों पर इस संगीत अनुराग के नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई पड़ रहे हैं। आसानी से उपलब्ध इस संगीत ने व्यक्ति में एक 'मरीचिका' को जन्म दिया है, जो कुछ नया पाने के चक्कर में अशांत तथा अतृप्त हो रहा है। बाजार में उपलब्ध संगीत का कोई नियंत्रक नहीं है। इसको बनाने से बेचने वाले सभी लोगों का मकसद धन अर्जित करना है। यही वजह है कि शास्त्रीय संगीत का विपणन आज भी लाभ की वस्तु नहीं है। केवल नामी गिरामी शास्त्रीय कलाकार ही अपने संगीत को मार्किट में बेचने का खतरा मोल ले सकते हैं।

जब हम लोक संगीत के बारे में सोचते हैं हमारे मन में ग्रामीण अंचल का दृश्य प्रतिबिम्बित होने लगता है। वास्तव में कृषि के मशीनीकरण से लोक संगीत की परम्परा क्षरण हो रही है। अब नये युग तथा स्वस्थ जीवन शैली के अनुसार लोक संगीत नहीं पनप रहा। दृश्य–श्रव्य माध्यमों से लोक संगीत को अति कृत्रिम ढंग से अश्लील नृत्य

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

तथा लचर गायकी द्वारा दूषित किया जा रहा है। आज का लोक संगीत हमारी स्वस्थ संस्कृति और परम्परा का भौंडा प्रारूप है।

विश्वीकरण तथा घुलनशीलता : यातायात तथा संचार के साधनों ने हमारे देश के विभिन्न राज्यों को आपस में जोड़कर सांस्कृतिक तथा सामाजिक आदान–प्रदान के द्वार ही नहीं खोले अपितु विश्व के विभिन्न देशों के साथ शिक्षा तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान के प्रयास भी प्रारम्भ किए हैं। इसके लिए सन् 1946 में भारत न्छम्ैब्व का एक सक्रीय सदस्य बना। सन् 1950 में भारतीय सांस्कृतिक सम्ब(परिषद की स्थापना हुई। इसके संस्थापक अब्दुल कलाम आजाद, जोकि स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री थे, का उद्देश्य आपसी सहमति से भारत तथा दूसरे देशों में सांस्कृतिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करना था। इस परिषद ने संगीत को प्रचारित तथा प्रसारित करने में अनेक कदम उठाए है। इनके फलस्वरूप ही विदेशी विद्यार्थियों को भारत में संगीत तथा नृत्य की शिक्षा ग्रहण करने के लिए अनेक शिक्षा केन्द्रों को मान्यता दी है। विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप वजीफा प्रदान करना भी इस सांस्कृतिक परिषद का लक्ष्य है। इस परिषद का अपना स्वतंत्र प्रकाशन है जिसके माध्यम से यह हिन्दी के अतिरिक्त कुछ भाषाओं में अपने श्रवनतदंस भी प्रकाशित करती है। इसी संस्था ने शास्त्रीय संगीत पर एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया, जिसका विषय था– व्यक्तिगत निर्माण में शास्त्रीय संगीत की भूमिका''।

इण्डियन काऊंसिल ऑफ सोशल साइंस' भी अन्य कार्यों के अतिरिक्त विश्व में भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए अनुदान प्रदान करती है। 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' विदेशों में होने वाली सेमिनार तथा सम्मेलनों में सम्मिलित होने के लिए महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों को अनुदान प्रदान करती है।

निजी स्तर पर अप्रवासी भारतीय भी विभिन्न कलाकारों को अपने–अपने देश में आमन्त्रित कर संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। ऐसे प्रयासों से ही पंजाबी संगीत–पॉप संगीत व रैप द्वारा देश–विदेश में अपनी धूम मचा रहा है। इसी प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत, फिल्मी संगीत तथा लोक संगीत विदेशों में अपना लोहा मनवा रहा है।

महान् संगीत हस्तियों का योगदान : विश्व में भारतीय संगीत को बुलन्दियों तक पहुंचाने में उस्ताद अल्लाउद्दीन खां के शिष्य पं. रविशंकर तथा अली अकबर खां का विशेष योगदान है। पं. रवि शंकर ने पाश्चात्य संगीत के साथ प्रयोग भी किए परन्तु शास्त्रीय संगीत को किसी प्रकार कमतर नहीं होने दिया। इसीलिए पं. रविशंकर व सितार को पृथक करके नहीं देखा जा सकता। भारतीय संगीत में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार ने 'भारत रत्न' से नवाजा। उस्ताद अली अकबर खां का सरोद विश्व के अनेक देशों में बजा। परिणाम स्वरूप भारत में ही नहीं विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत की ओर रूझान बढ़ा। पं. शिव कुमार शर्मा ने संतूर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने शहनाई तथा पं. रविशंकर ने सितार को प्रभावित ढंगों से प्रचारित तथा प्रसारित किया। ऐसे विदेशी संगीतकार जो भारतीय संगीत के लिए जाने जाते हैं, उनमें स्वीट्जरलैंड के सरोदवादक–केन जुकरमैन,

Vol. 11, Issue March-September 2020
ISSN: 0976-0237
UGC Approved Journal No.: 40903
Impact Factor: 3.765

अमेरिकन बांसुरीवादक–स्टीव गौडरन तथा इटालियन ध्रुपद गायक – अमेली क्यूनी प्रमुख है। विदेशी घरानों में रोटरडम घराना तथा सेन–रा–फेल–सेनिया घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रफुल्लित कर रहे हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि आधुनिक काल में होने वाले अब तक के बदलावों से हमारे संगीत की स्तर वृ(हुई है। परन्तु तेज रफ्तार परिवर्तन हमारी संस्कृति के लिए अभिशाप न बन जाए, इन पर चिंता व्यक्त करते हुए श्री रविभूषण ;वार्डलार्ड–1994द्ध को उ(ृत करते हुए लिखते हैं, ''आधुनिकता, तकनीक, घटनाओं और मीडिया की तेज रफ्तार, सभी आर्थिक, राजनैतिक और यौन सन्दर्भों ने हमें पलायन वेघ ;म्बंचम टमसवबपजलद्ध की ओर धकेला है जिसके परिणाम स्वरूप हम वर्तमान और इतिहास के क्षेत्र से मुक्त हो गए हैं''21 इसीलिए मेरी सभी गुणी कलाकारों, शिक्षकों, मंच–प्रदर्शकों तथा संगीत उत्पादकों से विनती है कि वे ऐसे संगीत का सृजन करें जो न केवल मनोरंजन व आनंद प्रदान करता हो अपितु व्यक्ति को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत, संवेदनशील तथा कर्त्तव्यनिष्ठ होने की प्रेरणा देता हो। संगीत को सुनने वाला समझदार व मननशील श्रोता अपनी स्वस्थ आलोचना से संगीत में आने वाले विघटन की ओर सभी कलाकारों का ध्यान आकर्षित करे। इस प्रकार संगीत के उत्थान के साथ स्वस्थ समाज तथा संस्कृति का सतत् निर्माण होगा।